गुरुवाणी

हम पूजा पर बैठे हों....मंत्र-जाप कर रहे हों.....पुष्प अर्पित कर रहे हों.....और इसी बीच, हमारे घर के किसी बुजुर्ग को प्यास लग जाय या उन्हें किसी अन्य सहारे की आवश्यकता हो, तो हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम...पहले उनकी आवश्यकता की पूर्ति करें।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक १, वाराणसी। गुरुवार १५ जनवरी २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

माँ

आधुनिकता के इस बदलते युग में भी यदि व्यक्ति की सोच थोड़ी निरपेक्ष, निस्पृह हो जाय तथा कहीं ठहर जाय तो उसके जीवन-दामन के दमकते रहने में कोई संशय नहीं है। आज के युग के जीवन का सरल संविधान "अघोर वचन शास्त्र" का नियमित अध्ययन एवं मनन ही समस्त समस्याओं का निराकरण है जो सरल एवं बोधगम्य भाषा में चित्रित है, उपरोक्त ग्रन्थ के कुल पच्चीस अध्यायों में पहला अध्याय "माँ" शीर्षक ही है, जिसमें शक्ति के विभिन्न स्वरूपों का निरुपण किया गया है। यह भी सर्वविदित ही है कि "माँ गुरु" की लोकप्रिय छवि कितनी मनोहारी, प्रभावकारी एवं सर्वग्राही है। संभवत: इसी को दृष्टिगत रखते हुए महाप्रभु अवधूत भगवान जी के द्वारा "माँ" की महिमा का बखान किया गया है एवं "सर्वेश्वरी त्वं पाहिमाम शरणागतम्" को सर्वोपरि स्थान दिया गया है।

यह तथ्य है कि विधि ने संसार में मानव के रूप में मनु-शत्रुपा, एडमइब्स, आदम हौवा को सांकेतिक बताकर हर वर्ग में नर और नारी को संसार रूपी गाड़ी के दो अपरिहार्य पहिये के रूप में निर्निमित किया है। ईश्वर के यहाँ से दोनों को विभिन्न विशेषताओं से युक्त कर, धरा पर पदार्पण कराया गया है लेकिन दुर्भाग्य से बदलते परिवेश में भी वे कहीं एक समान पलड़े पर नहीं है, विडम्बना यह है कि भारत जैसा राष्ट्र जहाँ की धरोहर सीता-राम, राधा-कृष्ण, लक्ष्मीनारायण, उमा-शंकर हैं जहाँ अहिल्या-कुन्ती, तारा, द्रौपदी, मंदोदरी जैसी पंच कन्याओं को विशेष सम्मान मिला है। भारतवर्ष में तो प्राचीन काल से ही विद्योत्तमा, गार्गी, शंकुतला, भारती आदि संस्कारवान, विद्वान, शीलवान, संवदेनाधारी एवं उत्कृष्ट दर्जे की समाजसेविका के रूप में जानी जाती रही हैं। यह सब सिद्ध करता है कि उस काल में नारी की शिक्षा व्यवस्था अति उत्तम थी। समाज के विभिन्न आयोजनों में वे खुलकर हिस्सा लेती थीं, वेद पढ़ने एवं पढ़ाने की उन्हें पूरी स्वतंत्रता थी, यज्ञ, होम में वे पुरुषों के साथ ऋत्विज तथा याजक के रूप में भाग लेती थी तथा इसी कारण तत्कालीन समाज भी समुन्नत था एवं गुणवान सन्तानोत्पत्ति तो आम बात थी।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामना

परमपूज्य पीठाधीश्वर जी की असीम कृपा से सन् २०१५ आप सभी सुधी पाठकों, श्रद्धालुओं के लिये अति उज्जवल, विकासशील, स्वास्थवर्द्धक एवं समृद्धिवर्द्धक हो।

परन्तु आज समाज भयावह स्थिति के संक्रमण काल में है, नारी के अस्मिता पर ही प्रश्नचिन्ह है, अपनी भावी जननी को ही समाज तिरस्कार कर रहा है तथा भ्रूण हत्या की संख्या भारतवर्ष के पढ़े लिखे परिवारों में ही बढ़ती जा रही है, आये दिन दुश्शील एवं पतित चरित्र के पिशाचों द्वारा अल्प वयस्क कन्याओं का बलात्कार एवं राजधानी दिल्ली से लेकर हर शहर-देहात तक में आये दिन हत्या, बलात्कार आदि की घटनाओं ने राष्ट्र को झकझोर कर रख दिया है, यहाँ तक की विदेशी पर्यटकों तक से ऐसी घिनौनी हरकतों की घटनायें विश्व स्तर पर भी हमारी संस्कृति पर कुठाराघात है। यहाँ तक कि आज सफल दाम्पत्य जीवन पर भी ग्रहण लग रहा है? यह दशा ऐसे राष्ट्र की कैसे हो गई जहाँ कहा गया है कि "यत्र नारी पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" यानी जहाँ नारी को सम्मान दिया जाता है वही देवत्व का वास होता है तथा इसका परिपालन किया जाता रहा है, फिर क्यों आज कम से कम भारतीय समाज की स्थिति इस क्षेत्र में इतनी दयनीय हो गई? इसके लिये तनिक इतिहास के पन्नों में भी जाना पड़ेगा, जब पुरुष शासकों की बर्बरता बढ़ी, उनमें अपने पाश्विक, शारीरिक, दमखम को दिखाने की होड़ लगी, तथा बर्बरता एवं दमन का चक्र चला, जब एक दूसरे के साम्राज्यों पर आक्रमण होने लगे तथा आतातायियों एवं आक्रमणकारियों ने धन-जन की व्यापक बर्बादी की लूट की। सामग्रियों में नारी की भी गिनती की जाती थी, कहने का तात्पर्य है कि इस देश के सुनहरे वातावरण को ध्वंस करने में समय काल के अनुसार अपने देश के ऐय्याश, आरामतलब शासकों के साथ ही विदेशियों का भी हाथ रहा है, उसी समय से स्त्रीत्व की मर्यादा को रौंदकर पुरुष प्रधान मानसिकता का वर्चस्व बढ़ा तथा विधानानुसार शारीरिक बेबसी से नारी के कलात्मक, सृजनात्मक, स्नेहाशक्ति क्षमता की हत्या की जाती रही, यद्यपि यही स्थिति कमोवेश विश्व के हर देशों में (अपवाद छोड़कर) बनी रही। आते आते स्थिति बद से बदतर हो गयी तथा धार्मिक मान्यताओं में भी अति की गई तथा बाल-विवाह, सती प्रथा जैसी, कुप्रथाओं के जड़ से समूल नाश में राजा राम मोहन राय जैसे मनीषियों को बड़े ही पापड़ बेलने पड़े यहाँ तक कि कुछ शताब्दी पूर्व में इंग्लैण्ड ने महिलाएँ मताधिकार के प्रयोग से सर्वथा वंचित थी। भारत में भी सन् १९५० तक विधवा महिलाओं का सर्वाधिकार हक पति के सम्पत्ति पर नहीं होता था जबकि नारी को यथोचित सम्मान एवं पुराणों में शक्ति की संज्ञा से विभूषित कर समाज को भरपूर लाभ प्रदान किया जाता था। वही दकियानूसी प्रथाओं के अनुसार गायत्री मंत्र महिलाओं के लिए सर्वथा निषेध किया गया। समाज इस प्रत्यक्ष लाभ से सदा सदा के लिए वंचित हो गया। रामचरित मानस में राम-सीता के विवाह के उपरान्त जनक जी द्वारा दशरथ जी को सम्मान देने के तथ्य को उपहासास्पद बनाकर कालान्तर में दहेज जैसी दानवी कुप्रथा का प्रचलन हो गया जिससे आज भी हमारा विशेषत: हिन्दू एवं खासकर मध्यमवर्गीय परिवार बुरी तरह आहत है तथा पीस रहा है, रही सही कसर आधुनिकता एवं फैशन परस्ती, सिनेमा, टेलीविजन से प्रसारित होने वाले रंगारंग कार्यक्रमों ने पूरी कर दी, जिससे निर्दोष बालक, बालिकाओं, तरुण, तरुणियों का चित्त विकृत हुआ एवं पोशाकों से अभद्र प्रदर्शन का खामियाजा भी आज इन्हीं को भुगतना पड़ रहा है। लड़कियों के द्वारा नशा को अत्याधुनिकता के दौर में अपनाया जाना आग में घी का काम कर रहा है।

अत: ऐसे लगातार गिरावट की स्थिति को रोका जाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि दिनोंदिन बढ़ते प्रेम विवाह, असमय यौनाचार, स्वस्थ समाज को दिनोदिन दीमक की तरह चाट रहे है, इन्हें तत्काल रोकने हेतु एवं बालिकाओं, बालकों के मर्यादित आचरण हेतु, कामोत्तेजक फिल्मों का सेंसर द्वारा आवश्यक रूप से रोका जाना, बेहूदे भद्दे पोस्टर एवं टेलीविजन पर प्रचार जिसमें नारी को सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस पर पूर्णत: कानूनन रोक लगनी चाहिए एवं समाज के बुद्धिजीवि वर्ग की ओर से इसे जोरदार ढंग से उठाया जाना चाहिए ताकि और अधिक क्षति न होने पाये। दुर्भाग्य यह है कि एक ओर जहाँ फिल्मी स्टाइल में महानगरों की जिन्दगी में अश्लीलता, रुग्णता का रूप धारण कर रही है तथा पर्दे की नायिका बनने के चक्कर में प्रतिदिन धोखेबाजों, मक्कारों की शिकार लड़कियाँ हो रही हैं, आत्महत्या

शेष पृष्ठ दो पर

पारिवारिक अध्यात्म

आध्यात्मिकता को साधारणतया: बड़ा दुरुह कष्ट साध्य समझा जाता है, जनसाधारण के पहुँच की बाहर की क्रिया समझी जाती है और सहज ही यह कुछेक खास प्रकृति के व्यक्तियों की धरोहर मानी जाती है, जबकि स्थिति बिल्कुल इसके विपरीत है। अध्यात्मिकता या अध्यात्म मानव के एक निर्दोष स्थिति का नाम है एक तटस्थता का भाव है, जहाँ, अहम, घमंड, दंभ, पाखण्ड, अहंकार, आडम्बर, अनाचार, पापाचार, व्यभिचार, अत्याचार, मानसिक विकार का नितान्त अभाव हो, जिस व्यक्तित्व, जिस मानव में मानव के प्रति कुभाव, दुर्भाव उत्पन्न न हो, स्वार्थ, अपना-पराया के भाव का पराभव हो, वह चाहे जिस स्थिति में हो, अध्यात्मिकता के सन्निकट है उसे उस अव्यक्त आनन्द की आन्तरिक अनुभूति स्वमेव प्राप्त होने लगती है। कहा जाता है कि गृहस्थ आश्रम सभी आश्रमों में उत्तम है, यानी हर घर-परिवार के सदस्यों में चाहे वह वृद्ध हो, बच्चा हो, पुरुष हो, महिला हो, अध्यात्मिक सुगन्ध तो रहती ही है इसके लिए ऊपरी हाव-भाव, वेश-भूषा या एकान्त स्थान की कोई अनिवार्यता कत्तई नहीं है, क्योंकि यह उसके बिना परिश्रम ही ऐसे प्राप्त हो जाता है जैसे कि जर्मनी में पैदा हुआ बच्चा अपने आप जर्मन सीख लेता है या किसी रहन-सहन, रीति-रिवाज या खाना-पीना को वह अपने परिवार से ही सद्ग्रहण कर लेता है, परिवार के मुखिया चाहे वह स्त्री हो या पुरुष उसका प्राभाव अपने परिवार के सदस्यों पर निश्चित ही पड़ता है। यदि परिवार के सदस्यों में समय के प्रति प्रातिबद्धता, अपने कार्य के प्रति निष्ठा, व्यवहार में सरलता झलकती है तो इसी का नाम अध्यात्म है एवं परिवार का प्रत्येक सदस्य उतने अनुपात में अध्यात्मिक है जितने प्रतिशत उसमें उपरोक्त सभी गुण विद्यमान है, स्थिति प्रतिकूल तो तब हो जाती है जब कि आम लोग धार्मिकता अथवा आध्यात्मिकता को रात दिन माला-जपना, ध्यान लगाना अथवा मंत्रोच्चारण से समझते हैं, इन सब सीमाओं में अध्यात्म को नहीं बाँधा जा सकता, निरीह, निर्दोष बच्चे तो स्वाभाविक रूप से अध्यात्मिक होते हैं, उन्हें पशु के भी दर्द में पीड़ा महसूस होती है, उनके अन्दर संवेदना का भण्डार होता है, वे अधिक प्रश्न इसलिए पूछते हैं कि उनका बालमन आन्दोलित रहता, यह तो सतर्कता उन महानुभावों माता-पिता, अभिभावकों का है जो अपने शिशु को समाज के विभिन्न पहलूओं, उतार-चढ़ाव को कैसे समझाते हैं। उनके श्वेत स्लेट पर क्या लिखते हैं अथवा वे कैसे अपना जीवन-निर्वाह करते हैं? क्या वे बेमतलब ही अपने परिवार में झूठ, फरेब इत्यादि को स्थान देते हैं अथवा वे छोटी सी छोटी चीजों पर भी अध्यात्मिक प्रवृत्ति यानी सदाशयता, निराभिमानिता, श्रमशीलता का प्रदर्शन करते हैं, इन्हीं तत्त्वों को निर्दोष बालपन अपने सूक्ष्म तरीकों से अपना लेता है, फलस्वरूप वही बालक अथवा बालिका अपने द्वारा प्राप्त किये गये गुण-धर्म के आधार पर अपनी अगली पीढ़ी को भी विरासत के रूप में इसे प्राप्त कराते रहते हैं।

अत: सच्ची अध्यात्मिकता का अर्थ है मनुष्य में देवत्व का अंकुरण, परिवार के सदस्यों में वास्तविक एकता एवं तालमेल, स्त्री, पुरुषों के मध्य परस्पर सहानुभूति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण का सृजन। सतत अपने दुर्गुणों को दूर करना, सदगुणों को सप्रेम धारण करते रहने के अभ्यास को ही सच्चे अर्थों में अध्यात्म कहते हैं तथा समस्त परिवार यदि इसमें पूरे उदारता की भावना से, मनोयोग से अपने निर्दिष्ट कर्तव्यों को करें तो यही सच्चा पारिवारिक अध्यात्म कहलाता है। ऐसे ही अध्यात्म को यानी घोर को अघोर में सरलतम रूप में परिणित व परिवर्धित कर व्यवहारिक जीवन को सुखमय बनाने का क्रम चलता रहता है।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

करती हैं वहीं दूसरी ओर निर्दोष जाने दहेज की बलिवेदी पर चढ़ रही है।

यद्यपि प्राकृतिक रूप से नारी के गरिमा को पुन: पहचाना गया है। भारतीय समाज में उसके प्रति संवेदना प्रदर्शित की गयी है तथा आज खुशी की बात है कि भारत सहित विश्व के कई राष्ट्रों में हर क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का योगदान कम नहीं है। यह लाभ अपने देश को भी मिल रहा है, जहाँ पर उच्च शिक्षा, आई०ए०एस० परीक्षा, चिकित्सा, राजनीति तथा विज्ञान के क्षेत्र में भारत की महिलाओं ने अपना परचम लहराया है तथा देश की तरक्की में इनका खासा योगदान बढ़ रहा है। यह अत्यन्त ही हर्ष की बात है कि लगभग इस आधी जनसंख्या को उनका उचित अधिकार, सम्मान मिल रहा है जिसकी वे वास्तव में पात्र/हकदार हैं। माननीय उच्चतम न्यायालय ने वर्ष २०१० के अपने एक फैसले में कामकाजी महिलाओं से गृहणियों को किसी भी दृष्टिकोण से कमतर नहीं माना है एक कुशल गृहणी न केवल घर को संभालती है बल्कि अपने पति, बच्चों एवं अन्य परिजनों को ससमय नाश्ता, भोजन, स्वच्छ वस्त्र प्रदान कर प्रत्यक्ष रूप से घर गृहस्थी के संचालन में प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

यह विदित है कि अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान में कुछ वर्ष पूर्व ही एक नाबालिग

माँ

लड़की मलाला युसुफजई को तालिबानी राक्षसों ने केवल इसलिये गोली मारी कि वह पाकिस्तान की बेटी महिला शिक्षा की हिमायती थी।सौभाग्य से उसे विगत वर्ष २०१४ का नोबेल पुरस्कार प्रदान कर विश्व को उन सभी ऐसी बहादुर, निडर लड़कियों को उत्साहित एवं सम्मानित किया गया है।

अस्तु जहाँ चाह है वहीं राह है। सौभाग्य से औघड़ सन्तों के द्वारा समाज के इन्हीं विद्रूपों को दूर करने के लिए दहेज विरोध, नारी शिक्षा तथा नशाबंदी पर अत्यधिक जोर दिया जाता है ताकि पूर्व की भाँति समाज में समरसता का वातावरण सृजित हो न कि नारी को, दोयम दर्जे का नागरिक मानते हुए उसे पराश्रयी, बेबस, दासी, भोग्या समझने की हिमाकत

की जाय एवं पुरुष वर्ग की बर्बरता की शिकार होने से अपनी रक्षा वह स्वयं कर सके तथा समाज में शालीनता, मर्यादा एवं सच्चरित्रता की धाक जमे तथा घर घर में अच्छी बहनें, पतिव्रता नारियाँ, वात्सलमयी माँ, बुआयें अपने कलात्मकता, सृजनात्मकता एवं भाव भरे सुगन्ध की सुरभि फैलाती रहे एवं पुरुष वर्ग का भरपूर सहयोग बना रहे तथा घर-घर में बेटी और बेटा को माता पिता का परिवार दाया एवं बाया अंग अथवा अपनी दाहिनी एवं बाँयी आँख की तरह समझे और गले लगाय।

आमंत्रण

श्रद्धेय माताओं, बहनों एवं धर्म बन्धुओं!

अघोर गुरुपीठ बाबा कीनाराम स्थल अर्थात् क्रीं कुण्ड के 11वें पीठाधीश्वर बाबा श्री सिद्धार्थ गौतम राम जी का अभिषेक दिवस एवं ब्रह्मलीन पीठाधीश्वर बाबा राजेश्वर राम जी (बुढ़ऊ बाबा) का महानिर्वाण दिवस तथा सेवा संस्थान का स्थापना दिवस **दिनांक 10 फरवरी 2015, मंगलवार** को परम्परागत ढंग से इस परम् पुनीत स्थली पर मनाया जायेगा।

इस अविस्मरणीय महोत्सव पर आप सभी अघोर भक्त सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम

1. प्रातःकालीन आरती के उपरान्त श्रमदान एवं सफाई कार्यक्रम तथा प्रभातफेरी।
2. प्रातः 8 बजे से पूज्य पीठाधीश्वर जी द्वारा समस्त समाधियों का पूजन एवं दर्शन।
3. पूर्वाह्न 9.30 बजे से श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य पीठाधीश्वर जी का दर्शन-पूजन।
4. दोपहर में प्रसाद वितरण।
5. सायंकाल 4 बजे से गोष्ठी एवं पूज्य पीठाधीश्वर जी का आशीर्वचन।
6. सायंकालीन आरती 7.30 बजे से प्रारम्भ।
7. रात्रि 8 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम।

प्रयाग में अघोरेश्वर महाप्रभु का आशीर्वचन

धर्म स्वस्थ मार्ग देता है

पूज्य औघड़ भगवान राम जी ने कहा कि जन्म से कोई व्यक्ति न तो साधु होता है न चोर। कर्म से ही व्यक्ति साधु और चोर होता है। हम जिसे बीतराग कहते हैं, उसे किसी से राग द्वेष नहीं होता और न वह किसी को समझाना ही चाहते हैं, वह अपने ही कहता है, अपने ही सुनता है, वह बाह्य मुख नहीं होता, जो बाह्यमुख होता है, दूसरों की ओलाचना करता है, उसमें साधुता कैसे आ सकती है?

पूज्य बाबा ने कहा कि हमें किसी की बातें सुन कर बिल्कुल उतावला नहीं होना चाहिये। वह जिस तरह के वातावरण में रहते हैं, वैसा ही शब्द प्रयोग करते हैं। उससे उन्हें भी दु:ख होता है। साथ ही मौखिक विचारों से न हम अपने को तृप्त कर सकते है न दूसरों को तृप्त कर सकते हैं। मौखिक विचार यदि धार्मिक मंच से किसी बड़े व्यक्ति द्वारा ही क्यों न व्यक्त किया गया हो, उस पर हमें निर्णय लेना चाहिये कि हम उसे ग्रहण करें या नहीं। वक्ता की वैखरी कहाँ से कैसे व्यक्त कर रही है, बिना अपने संदर्भ में समझे यदि आप उसे अपना धर्म मान ले तो आपमें आत्मबुद्धि नहीं है। जिसे हम समाधिस्थ कहते हैं, वह अपने लिये अपने में समझने की कोशिश करते हैं।

पूज्य बाबा ने आगे कहा कि यह सच है कि महात्मा, सज्जनों के पास जब हम जाते हैं तो अच्छे विचार उत्पन्न होते हैं और दुष्प्रज्ञ, कुकृत्य काया के पास उठे बैठेंगे तो हममें निरर्थकता ही पैदा होगी। मगर महात्मा या भगवान ही मिल जाय और हम केवल क्षमा ही चाहते हैं और अपराध करते रहना चाहते हैं तो यह कदाचित नहीं होगा। जो न्याय हैं होगा ही। यदि हमें वह कार्य नहीं करना है तो किसी से कहते न फिरे, अपने आपसे कहें और अपने चाल, ढाल, वाणी से त्याग करें तो वह माफ हो सकता है। रोगी को औषधि महात्मा लोग देते हैं मगर वह कुपथ्य का सेवन करता ही रहे तो वह किसी कार्य का नहीं।

पूज्य बाबा ने आगे कहा कि धर्म किसी की रोटी, दाल, रोजगार या भगवान नहीं देता। वह स्वस्थ मार्ग देता है जिसे सुमार्ग को पकड़कर मनुष्य अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है। आपने कहा कि जिसे मार्ग की खोज है, उसे शत्रु भी मार्ग बताता है, उसके कमियों का ज्ञान कराता है और तंत्र मार्ग में, वाम मार्ग में जिसमें करुणा न हो वह उस मार्ग की उपासना नहीं कर सकता। अन्त में पूज्य बाबा ने पवित्र गंगा, यमुना के बारे में कहा कि वे हमें जन्म से मरणोपरान्त तक बहुत कुछ व्यवहारिक रूप से देती रहती हैं। देवता वही है जो कुछ दे हम उन्हें आदर दें या न दें कोई फर्क नहीं पड़ता।

संग दोष से बचें

पूज्य बाबा ने अपने आशीर्वचन में कहा कि मुकदमेबाजी, मद्यपान, जूआ एवं वेश्यागमन को प्रत्यक्ष नरक कहा गया हैं। इनसे अवश्य बचना चाहिये। इनके कारण मनुष्य मानिसक क्लेशों से व्यथित रहता है। लोग भय से मुकदमा लड़ते हैं और अपराध करते हैं। अपराध नहीं करेंगे तो निर्भय रहेंगे। जुआ कौड़ी भी लोग शत्रुसे नहीं बल्कि अपने मित्र के साथ ही खेलते हैं और अपने मित्र के साथ ही विश्वासघात करते हैं।

पूज्य बाबा ने आगे कहा कि इसके साथ ही संगदोष भी लगा है। आपने घरेलू भाषा में समझाते हुए कहा कि किसान के खेत में अन्न के पौधों के साथ ही घास के निरर्थक पौधे भी उगते हैं जो उनसे अधिक हरे भरे होते हैं। और पहचान मे नहीं आते। मगर वे पहले ही फूटते हैं। किसान उन्हें उखाड़ कर बाहर फेंकते हैं और पुष्ट अन्न को सेते है। कुकृत्य करेंगे तो समाज में अच्छे लोगों के साथ नहीं बैठ सकते। पूज्य बाबा ने बुराईयों का बैना बाँटने की प्रवृत्ति की भर्त्सना करते हुए कहा कि बैना बाँटने वाले दुष्प्रज्ञ होते हैं। वे आपका जीवन दुश्शील बना देते हैं।

पूज्य बाबा ने दूसरे धर्मों को अपने ही धर्म की तरह सम्मान देने की सलाह देते हुए कहा कि आज के युग में यदि हम धर्म की अपनी ही संकुचित परिधि में रहेंगे तो अपने समाज को सही दिशा नहीं दे सकते। सभी धर्मों में महापुरुष हुए हैं और उनके अनुयायी वैसी ही प्रेरणा प्राप्त करते है जैसी कि हम अपने धर्म में प्रतिष्ठित महापुरुष या भगवान से प्रेरणायें प्राप्त करते हैं। इसलिये हमें किसी भी धर्म के साथ दुराव नहीं रखना चाहिये।

इसी संदर्भ में पूज्य बाबा ने आगे कहा कि देवता केवल रटने और चिल्लाने से नहीं प्रसन्न होते। देवता तो स्मरण मात्र से अपने आप में उदय होते हैं। हमें अपने जीवन में जीने का ढंग सीखना चाहिये। हमारे देश के धार्मिक और राजनैतिक नेता जो त्रिपटक के शान्ति का उपदेश देते हैं और गीता का कर्म और आचरण, यह असह्य है। असह्य के कारण हमारा समाज जर्जर होता जा रहा है। ईश्वर हमारा प्राण ही है। प्राण की उपेक्षा करके उसे ढूँढ़ना निरर्थक है। प्राणमयी भगवती से ही हमारा सम्बन्ध है। उसी के नाते सबके साथ नाता हैं। उसकी उपेक्षा न हो उदासीनता न हो तो सुगम है, सब कुछ सुलभ है।

शक्ति उपासना की भारतीय परम्परा उज्जवल

पूज्य बाबा ने कहा कि हम अपने को शक्ति उपासक कहते हैं मगर हमारे देश में बहुत दिनों तक शक्ति की पूजा नहीं बल्कि सामग्री की पूजा होती रही। आज भी हम अपने को अनेक जाति, वर्ग में रखकर देखते समझते हैं। यदि हमारी यही प्रवृत्ति बनी रही तो जो स्वतंत्रता हमने इतने परिश्रम से प्राप्त की है वह खतरे में पड़ सकती है। आपने कहा कि हमारे बड़े-बड़े नेता भी हमें इकट्ठा नहीं देखना चाहते, शायद वे इससे अपने लिये कोई खतरा महसूस करते हैं। मगर जो आगन्तुक विचार हममें आ गया है, उसके लिये हमें इकट्ठा होना होगा। आपने कहा कि जिस तरह से थाली में भोजन और अनेक तरह की साग सब्जी जब परोसा जाता है तो वह भोजन रुचिकर होता है, स्वास्थ्यकर होता है। अनेक तरह के व्यंजन या अनेक जातियों को एक थाली में परोसने की कोशिश ही हममें स्वास्थ्य और शक्ति उत्पन्न कर सकती है। शक्ति फूल, माला या कोई प्रार्थना पूजा नहीं होती।

पूज्य बाबा ने कहा कि धर्म वही है जो हर तरह से तृप्ति, मैत्री, करुणा उत्पन्न करें। हम लोगों का शादी विवाह होता है तो लड़का, लड़की की कुण्डली मिलायी जाती है। मगर हम ऐसे ही किसी बताये हुए देवता की उपासना करते रहे, उपदेश ग्रहण करते रहे तो वह निरर्थक होगा। यह देश महान आत्माओं का देश है जो हमें शक्ति के लिये मार्गदर्शन देते रहे हैं। मगर जो अपने आप पर दया नहीं करता वह न हिन्दू धर्म में हैं न मुसलमान, न ईसाई धर्म में हैं। अपने आपकी शरण न जाने, अपनी रक्षा अपने आप न करने से पशु या चौपाया के जीवन की सम्भावना उत्पन्न होती है। आपने कहा कि मनुष्य कुकृत के कारण न अपने पास बैठता है न दूसरों के पास बैठता है, बराबर चल रहा है, क्षण भर क लिये अपने पास नहीं ठहरता। जो अपने पास क्षण भर के लिये भी नहीं ठहरता वह किससे मिलेगा? उस देवता से मिलने के लिये उसके स्पन्दन और स्पर्श के लिये अवश्य अपने में ठहराव लाना होगा।

अन्त में पूज्य बाबा ने अपने बारे में कहा कि अपना घर द्वार छोड़ दिया है न कि अपना समाज छोड़ा है। हम जहाँ भी जायेंगे अपना समाज बन ही जायेगा। इसलिये हमारी कुछ सूझ हो तो अपने राष्ट्र और समाज के लिये कुछ करें और अपना हिन्दू धर्म जिसमें हम सभी रहते हैं हमें यही प्रेरणा देता है कि इसमें रहने वाले सभी जाति वर्ग को एक थाली में अनेक व्यंजन जैसे देखे, समझे। आपने सबके लिये मंगल कामना करते हुए कहा कि नववर्ष सबके लिये मंगलय हो।

शक्ति संचय से ही मानव में कुशलता

समाज में अधिकाधिक दोषों के व्याप्त होने का एकमात्र कारण मनुष्य में संतुलन का अभाव है। मनुष्य शक्तिहीन होकर और बल के अभाव में अपने संयम को खो चुका है। उसे अपने ऊपर भी विश्वास नहीं है। वह अपने को समझना भूल सा गया है। अहम भाव में प्रकृति पर विजय पाने के कारण अपने को समर्थ समझने लगा है। समर्थ होने के कारण, पर विचार करने का उसके पास समय नहीं रह गया है। मनुष्य अपने कार्यक्रम में अहंकारवश शक्ति की उपेक्षा करता है। यही कारण है कि दीर्घायु होने की बात एक सपने सी हो गई है।

लोग अल्पायु होते जा रहे हैं। शरीर का गठन पहले की अपेक्षा जर्जर होता जा रहा है। मानव आसुरी प्रवृत्ति का पोषक हो गया है। दानवता की लहर सर्वत्र फैल गई है। घृणा, द्वेष, अनाचार एवं अत्याचार आज के गुण माने जाने लगे हैं। इन सभी बुराईयों का एकमात्र कारण शक्ति का ह्रास होना है। यदि शक्ति का सन्तुलन समाज ने खोया होता तो आज की विकट समस्यायें कभी उत्पन्न ही न होती। इसलिये प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि शक्ति पूजन के साथ अपने में शक्ति संचय का भी अभ्यास डाले। यही मानव कल्याण का मार्ग है। शक्ति का अर्थ है कार्य करने की क्षमता।

जीवन में यदि शक्ति शब्द की व्याख्या की जाय तो यह स्वत: सिद्ध है कि शक्तिहीन मानव ही मृत्यु की संज्ञा पाता है। यदि शक्ति नहीं है तो वह किसी कार्य के करने में समर्थ नहीं हो सकता। शक्ति ही मनुष्य जीवन की जननी है इसी शक्ति के द्वारा उसका संसार में जन्म होता है। शक्ति की ही कृपा पर संसार में जीवन-यापन एवं उसके लिये सभी साधनों का संचय होता है।

१. पवित्र विचार एवं आचरण आप में एक ऐसी शक्ति संक्रान्त कर देते हैं जिससे आप सर्वेश्वरी माँ के स्वरूप को अपने में दूसरों में तथा अखिल विश्व में देखने लगते हैं।

२. जिनके मन में ईर्ष्या, द्वेष, बैर है वे निन्दनीय होते हैं। अपने व्यवहार से परेशान होते हैं। दु:ख उठाते हैं। तो क्यों हम दु:खद मार्ग पर पैर धरें।

३. किसी भी चीज की चाहे वह अच्छी है या बुरी हो, अपनी वाणी से निन्दा करना बुरा है। यह अपनी कमजोरी है। हम कैसे किसी के जीवन को और चलन को तौल सकते हैं।

अघोर गुरुपीठ बाबा कीनाराम स्थल के प्रमुख पर्व

08 जनवरी 2015	गुरुवार	गणेश संकष्ठी गणेश चतुर्थी (8.29 चन्द्रोदय)
13 जनवरी 2015	मंगलवार	माँ मैत्रायिनी योगिनी का निर्वाण दिवस
19 जनवरी 2015	सोमवार	अवधूत भगवान रामजी का अनन्य दिवस
24 जनवरी 2015	शनिवार	बसन्त पंचमी
10 फरवरी 2015	मंगलवार	अभिषेक दिवस, निर्वाण दिवस एवं सेवा स्थापना महोत्सव दिवस
17 फरवरी 2015	मंगलवार	महाशिवरात्रि
05 मार्च 2015	गुरुवार	होलिका दहन
06 मार्च 2015	शुक्रवार	होली

चैत्र नवरात्र प्रारम्भ

21 मार्च 2015	शनिवार	प्रथमा	मध्याह्न 1.08 मिनट तक (कलश स्थापना)
22 मार्च 2015	रविवार	द्वितीया	1.57 मिनट तक दिन में
22 मार्च 2015	सोमवार	तृतीया	दिन में 9.00 तक
24 मार्च 2015	मंगलवार	चतुर्थी	प्रातः 7.24 मिनट
25 मार्च 2015	बुधवार	पंचमी	प्रातः 6.08 मिनट तक
26 मार्च 2015	गुरुवार	षष्ठी	देर रात (सूर्योदय के पहले 5.20 तक षष्ठी) अर्थात् षष्ठी तिथि की हानि
26 मार्च 2015	गुरुवार	सप्तमी	देर रात (सूर्योदय के पहले 5 बजे तक)
27 मार्च 2015	शुक्रवार	अष्टमी	देर रात (सूर्योदय के पहले 5.11 मिनट तक अष्टमी)
28 मार्च 2015	शनिवार	नवमी	देर रात (सूर्योदय के पहले 5.54 मिनट तक नवमी)

(घट स्थापना 21.03.2015 शनिवार प्रातः 8.29 या 11.41 से 12.30 बजे तक)
(महानिशा पूजन 27.03.2015 शुक्रवार को मनाया जायेगा।)

30 मार्च 2015	सोमवार	कलश विसर्जन
01 मई 2015	शुक्रवार	परम पूज्य पीठाधीश्वर बाबा श्री सिद्धार्थ गौतम राम जी का अवतरण दिवस
31 जुलाई 2015	शुक्रवार	गुरुपूर्णिमा
01 सितम्बर 2015	मंगलवार	बहुला गणेश चतुर्थी (चन्द्र उदय 8.17 मिनट पर)
11 सितम्बर 2015	शुक्रवार	अघोर चतुर्दशी (महराजश्री का जन्म दिवस (भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी)
19 सितम्बर 2015	रविवार	लोलार्क षष्ठी महोत्सव
20 सितम्बर 2015	सोमवार	अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान राम जी का अवतरण दिवस (भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी)
21 सितम्बर 2015	सोमवार	सर्वेश्वरी समूह का स्थापना दिवस

शारदीय नवरात्र प्रारम्भ

13 अक्टूबर 2015	मंगलवार	प्रथमा	कलश स्थापना (समस्त दिन)
14 अक्टूबर 2015	बुधवार	प्रथमा	रात्रि 6.25 मिनट तक
15 अक्टूबर 2015	गुरुवार	द्वितीया	प्रातः 8.08 मिनट तक
16 अक्टूबर 2015	शुक्रवार	तृतीया	प्रातः 9.26 मिनट तक
17 अक्टूबर 2015	शनिवार	चतुर्थी	प्रातः 10.19 मिनट तक
18 अक्टूबर 2015	रविवार	पंचमी	प्रातः 10.40 मिनट तक
19 अक्टूबर 2015	सोमवार	षष्ठी	प्रातः 10.29 मिनट तक
20 अक्टूबर 2015	मंगलवार	सप्तमी	प्रातः 9.48 मिनट तक
21 अक्टूबर 2015	बुधवार	अष्टमी	प्रातः 8.41 मिनट तक
22 अक्टूबर 2015	गुरुवार	नवमी	प्रातः 7.11 मिनट तक

(घट स्थापना - 8.17 मिनट 9.57 तक या 11.20 से 12.06)

20 अक्टूबर 2015	मंगलवार	महानिशा (सप्तमी की रात्रि में मनाया जायेगा)
26 अक्टूबर 2015	सोमवार	शरद पूर्णिमा
11 नवम्बर 2015	बुधवार	दीपावली
25 नवम्बर 2015	बुधवार	देव दीपावली (कार्तिक पूर्णिमा)
03 दिसम्बर 2015	गुरुवार	भैरव अष्टमी
29 नवम्बर 2015	रविवार	अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान राम जी का महानिर्वाण दिवस

अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान
बी- ३/३३५, क्रींकुण्ड, रविन्द्रपुरी, वाराणसी (उ०प्र०)